

की भक्ति में लीन रहते थे। इसी के परिणाम स्वरूप जब वे पाँचवी कक्षा में अध्ययनरत थे तो पहली बार सन् 1981 में श्री कमधज कला राटोड भावरूप में उनके शरीर में प्रकट हुए और श्री भीमसिंहजी चौहान को लोक कल्याण के लिए गादी लगाने का आदेश हुआ। तब श्री लक्ष्मणसिंहजी चौहान ने अपने ग्यारह वर्षीय पुत्र की बाल्यावस्था को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक रविवार को घर के आँगन में ही गादी प्रारम्भ की, जहाँ आने वाले समस्त पीढ़ियों की समस्याओं का विश्वसनीय समाधान होता रहा। धीरे-धीरे श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ती गई और घर में गादी लगाने की यह जगह जब असहज महसूस होने लगी तो पिता श्री लक्ष्मणसिंहजी के निर्देशन में अब पुराने पैतृक मंदिर में गादी लगाई जाने लगी।

ऐसे ही एक बार उस गादी से केशरियाकुँवर का आदेश हुआ कि सागवाडा मार्ग पर स्थित एक निर्जन पहाड़ी पर मेरा निवास है और वहाँ जाकर के सेवा-पूजा करने से भक्ति और शक्ति की उन्नति में द्रुतगति का संचार होगा। इस आदेश की अनुपालना में प्रथम बार 5 जनवरी 1986 को इस पहाड़ी पर कलाजी महाराज की ज्योत जाग्रत हुई और श्री भीमसिंहजी चौहान ने कलाकुँवर के भावरूप में सभी भक्तों को आशीर्वाद प्रदान किया। धीरे-धीरे 'श्री काली कल्याण धाम वरदा' की ख्याति ने दूर-दूर तक विस्तार पाया। साथ ही धाम के गादीपति महन्त श्री भीमसिंहजी ने इस गादी के माध्यम से आहत लोगों को राहत प्रदान करते हुए अपना अध्ययन कार्य भी सतत रूप से जारी रखा और कला संकाय में स्नातक तक की शिक्षा पूर्ण की। उधर अपनी स्थापना से लेकर अगले कुछ वर्षों तक यह मंदिर इस पहाड़ी पर गूँही बिना किसी छप्पर के नीले गगन के तले खुले स्थान पर ही संचालित होता रहा।

इस बीच महन्तजी भी अपनी युवावस्था के दौर में प्रवेश कर चुके थे, जिस कारण से सामाजिक व सांसारिक जीवन के क्रम में उनको अपने भविष्य निर्माण की चिन्ता कुछ ज्यादा ही होने लगी थी। अपने इसी उत्तरदायित्व के मद्देनजर सन् 1990 में वे इस गादी से दूर होकर सी.एम.सी. इण्डिया कम्पनी, ओडब रोड अहमदाबाद में क्लर्क के पद पर कार्यरत हो गये। लेकिन कलाजी की पवन शक्ति

ने उनके मन-मस्तिष्क को दिग्भ्रमित कर दिया, जिस कारण से वे उस नौकरी को छोड़कर शीघ्र ही वरदा आ गये और पुनः गादी का संचालन शुरू किया। किन्तु यहाँ आकर भी उनके भीतर वही रोजगार की आस फिर से हिलोरे लेने लगी, तो उन्होंने राजस्थान सिस्टेम्स मिल डूंगरपुर में गाई का पद ग्रहण कर लिया। यहाँ पर भी केशरिया राटोड ने उनको अधिक समय तक टीकने नहीं दिया और परेशान होकर वे वापस अपने गाँव आ गये एवं वही पर रेडीमेड गारमेन्ट्स का व्यवसाय शुरू किया। मगर वहाँ पर भी कलाजी महाराज के चमत्कार से श्री भीमसिंहजी की इस दूकान में रात भर में ही दीमक लग गई। अगले दिन सुबह में जब उन्होंने अपनी दूकान खोली तो वहाँ सारे कपड़े दीमक और मकड़ी के जालों से खराब हो चुके थे।

आखिरकार श्री भीमसिंहजी चौहान ने कला कुँवर की इस सम्पूर्ण लीला को अन्तर्मन से आत्मसात् करते हुए अपना तन, मन, धन और समुचा जीवन कलाजी की सेवा में अर्पित करने का दृढ निश्चय कर लिया। तदुपरान्त 'श्री काली कल्याण धाम वरदा' में प्रत्येक शनिवार एवं रविवार की नियमित गादी प्रारम्भ हो गई। इस तरह महन्तजी द्वारा निस्वार्थ जनसेवा की भावना और सनातन धर्म की सतत प्रभावना के परिणाम स्वरूप कलाजी के आशीर्वाद से सन् 1993 में वे पोस्ट मास्टर की परीक्षा उत्तीर्ण कर ब्रांच पोस्ट मास्टर के पद पर नियुक्त हो गये और इस प्रकार से आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भरता का उनका ख्याब भी पूरा हो गया। अब वे सम्पूर्ण त्याग, तपस्या और तन्मयता के साथ इस धाम के प्रति समर्पित हो गये तथा उनकी इसी सात्विक सद्भावना से कलाजी के चमत्कार एवं इस धाम का नाम जिला, क्षेत्र, संभाग, प्रान्त व राष्ट्र की परिधि का अनवरत उल्लंघन करते हुए जन-जन की जुबान पर प्रसिद्धी पा गया।

अब यहाँ पर एक आम आदमी से लेकर विशिष्ट तथा अतिविशिष्ट व्यक्तियों तक का भी आगमन शुरू हो गया। जो अपनी मानसिक, शारीरिक, आर्थिक, भौगोलिक, पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक और अन्य कई प्रकार की व्याधियों को अपने साथ लेकर आते हैं तथा यहाँ से प्रसन्नचित्त सुख, शान्ति व